कुल पृष्ठ संख्या–28 (कवर पेज सहित) J क्रम संख्या 00796

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Ca
(I
(I NE
TH Y
प
श ार
--

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें ।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

विषय .... जैन दर्शन ....

परीक्षा का दिन .... शुक्रवार ....

दिनांक .... 04-04-25 ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15¼ को 16, 17½ को 18, 19¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांको की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	18	19	4
2	6	20	4
3	12	21	
4	2	22	
5	2	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	2½	योग	79½
15	3	प्राप्त अंको का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	3	80	अस्सी
18	4		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 40091

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में बोर्ड द्वारा प्रदत्त 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 177/2024

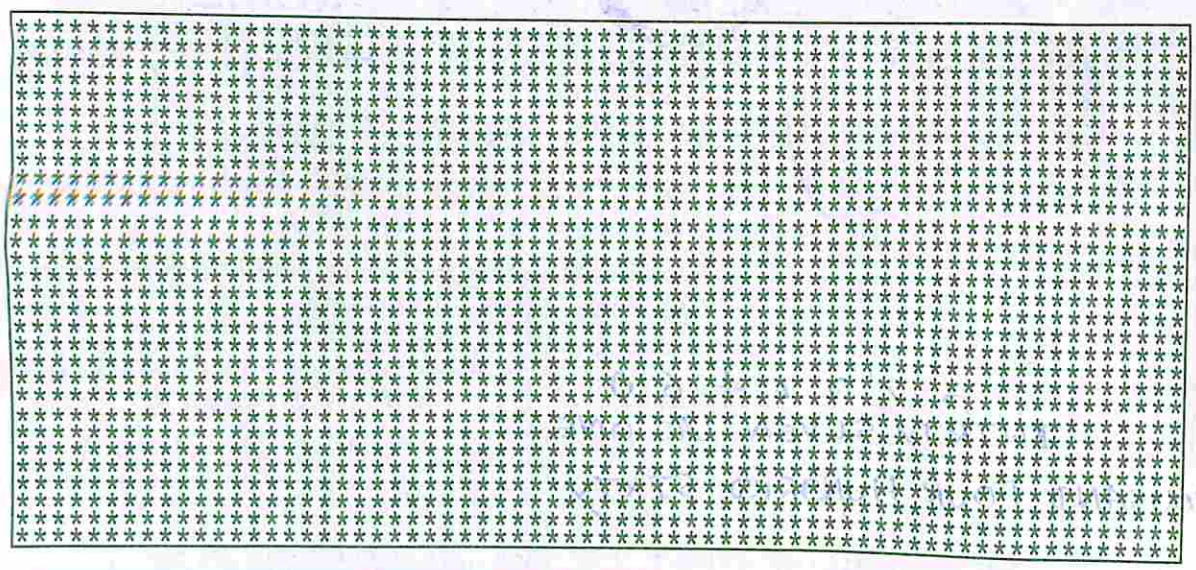

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी :–
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		खण्ड अ प्र. क. (1)
	1	वर्धमानम्
	2	सम्यग्ज्ञानम्
	3	त्रयः
18	4	सौगतीयमतेन
	5	प्रत्यक्षम्
	6	ताथागतमतेन
	7	द्विविधम्
	8	ईहा
	9	केवलज्ञानम्
	10	परोक्षम्
	11	स्मृतेः
	12	धारणा
	13	पञ्चविधम्
	14	प्रत्यभिज्ञानम्
	15	तर्कः

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	16	प्रीति ।
	17	हेत्वाभासाः ।
	18	उपनयः ।
		प्र. क. (2)
	1	अनधिगततथाभूतार्थ निश्चायकं प्रमाणम् ।
	2	प्रमाकरणं प्रमाणम्
	3	संशयो हि निर्णयविरोधी नत्ववग्रहः ।
6	4	सामान्यविशेषात्मा तदर्थो विषयः ।
	5	अन्यथानुपपत्त्येकलक्षणं लिङ्गमङ्ग्यते ।
	6	सहक्रमभावनियमोऽविनाभावः ।

BSER-177/2024

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		प्र. क. (3)
	1	मंदबुद्धीनाम् ।
	2	अतिव्याप्त: ।
	3	विपर्यय: ।
12	4	श्रीमदकलंकदेव न्यायविनिश्चये ।
	5	परीक्षामुख ग्रन्थे ।
	6	योग्यता ।
	7	स्मृति: ।
	8	प्रत्यभिज्ञानम् ।
	9	व्याप्ति: ।
	10	आगम: ।
	11	अनेकान्त: ।
	12	नय: ।

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड (ब) — प्र. क्र. (4)

उ.→ आत्मभूतम् —
यद्वस्तुस्वरूपानुप्रविष्टं तदात्मभूतम्
यथाऽग्नेरौष्ण्यम्

(2)

प्र. क्र. (5)

उ.→ लक्षणाभासम् — सदोष लक्षणं लक्षणाभासम्
लक्षणाभासः त्रयो भेदाः

(2)

① अव्याप्तम् ।
② अतिव्याप्तम् ।
③ असंभवि ।

प्र. क्र. (6)

उ.→ संशयविपर्ययानध्वसाय इति समारोपाः ।

(2)

विपर्ययः — विपरीतैककोटि निश्चयो विपर्ययः ।
उदा. — शुक्तिकायामिदं रजतमिति ज्ञानम् ।

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. क्र. (7)

उत्तर सौगतीय प्रत्यक्ष लक्षणं -
कल्पनापोढमभ्रान्तं प्रत्यक्षम् इति बौद्धाः

(2) अत्र हि कल्पनापोढपदेन सविकल्पकस्य व्यावृत्तिः अभ्रान्तमिति पदेन त्वाभासस्य /

प्र. क्र. (8)

उत्तर स्वावरणक्षयोपशमः योग्यता /

(2) तदुक्तं परीक्षामुखे -
स्वावरणक्षयोपशमलक्षणयोग्यतया हि प्रतिनियतमर्थं व्यवस्थापयति /

योग्यतैव विषयप्रतिनियमकारणमिति /

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. क. (9)

उ.→ सांव्यवहारिकं प्रत्यक्षम् -
~~तत्र~~ देशतो विशदं सांव्यवहारिक प्रत्यक्षम् ।
यज्ज्ञानं देशतो विशदमीषन्निर्मलं तत्सां-
व्यवहारिक प्रत्यक्षमित्यर्थः ।

2

तदुक्तं परीक्षामुखे
इन्द्रियानिन्द्रियनिमित्तं देशतः सांव्यवहारिकम् ।

प्र. क. (10)

उ.→ प्रत्यभिज्ञानम् = अनुभवस्मृतिहेतुकं
सङ्कलनात्मकं ज्ञानं प्रत्यभिज्ञानम् ।
इदन्तोल्लिखितज्ञानमनुभवः, तत्तोल्लिखितज्ञानस्मरणम् ।

2

तदुक्तं परीक्षामुखे-
दर्शनस्मरणकारणकं सङ्कलनं प्रत्यभिज्ञानम् ।

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. क. (11)

उ० साध्यम् - शक्यमभिप्रेतमप्रसिद्धं साध्यम् ।

शक्यम् - यत्प्रत्यक्षादिप्रमाणाबाधित्वेन साधयितुं शक्यम् ।
अभिप्रेतम् - वाद्यभिमतत्वेनाभिप्रेतम् ।
अप्रसिद्धम् - संदेहाक्रान्तत्वेनाप्रसिद्धं ।

(2) तदुक्तं परीक्षामुखे -
इष्टमबाधितसिद्धं साध्यम् ।

BSER-177/2024

प्र. क. (12)

उ० हेतोः द्विविधः -
(1) विधिरूपः
(2) प्रतिषेधरूपश्चेति ।

(2)

प्र. क. (13)

उ० व्याप्तिसम्प्रतिपत्तिप्रदेशो दृष्टांतः ।
(2) दृष्टांतो द्वेधा - (1) अन्वयदृष्टांतः
(2) व्यतिरेकदृष्टांतः ।

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी, उत्तर

(11) २४०५ (स)

प्र. क. (14)

उ०⇒ श्रीवर्द्धमानमर्हन्तं, नत्वा बालप्रबुद्धये।
विरच्यते मितस्पष्ट, संदर्भ न्यायदीपिका॥

भावार्थ – श्री वर्द्धमानमर्हन्तं चतुर्विंशतितमं – तीर्थंकरं महावीरम् अथवा श्रिया अनन्त चतुष्टय स्वरूपान्तरङ्गलक्ष्णया, समवशरणादिबहिरङ्गस्वभावया च लक्ष्म्या वर्द्धमानः वृद्धः परमप्रकर्ष प्राप्तः अर्हन् परमार्हत्समूहस्तम्।

2½

नत्वा नमस्कृत्य, कायवाङ्मनसां त्रिशुद्धया प्रणम्येत्यर्थः।
बालानां मन्दबुद्धीनाम्। मितो मानयुक्तः परिमितो वा। स्पष्टो व्यक्तः। संदर्भो रचना यस्यां सा चासौ न्यायदीपिका प्रमाण नयात्मको न्यायस्तस्य दीपिका प्रकाशिका। समासतो न्यायस्वरूपत्युत्पादनपरो ग्रंथो न्यायदीपिका इति भावः।

विरच्यते मया धर्मभूषणायतिना इति क्रियाकारकसंबंधः।

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बालाश्चित्रविधाः प्रोक्ताः - मतिकृता, कालकृताः, शरीरपरिमाणकृताश्चेति । तत्रेह मतिकृता बालाः गृह्यन्ते नान्ये ।

1. अव्युत्पन्नसंदिग्धविपर्यस्तास्तत्त्वज्ञानरहिता बालाः ।
2. ये यत्रानभिज्ञास्ते तत्र बालाः ।
3. अधीतव्याकरणा काव्यकोशा अनधीत न्यायशास्त्राः बालाः ।

प्र. क्र. (15)

उ→ विशदप्रतिभासं प्रत्यक्षम् । अत्र प्रत्यक्षं लक्ष्यम्, अविशदप्रतिभासत्वं तस्य लक्षणम् ।

तदुक्तं परीक्षामुखे -
अविशदं प्रत्यक्षम् ।

(3)

तदुक्तं प्रमाणमीमांसा -
अविशदः प्रत्यक्षम् ।

~~तदुक्तं पत्राचार्यो श्लोकवार्तिके -~~
तदुक्तं स्याद्वादविद्यापतिना -
विशदप्रतिभासात्मकं ज्ञानं प्रत्यक्षमिति ।

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

तदुक्तं भगवद्भिरकलंकदैवैर्न्यायविनिश्चये -
प्रत्यक्षलक्षणं प्राहुः स्पष्टं साकारमञ्जसा।

किं नाम वैशद्यम् ?
ज्ञानावरणस्य क्षयाद्विशिष्टक्षयोपशमाद्वा।
शब्दानुमानाद्य सम्भवि यन्नैर्मल्यमनुभवसिद्धम्
दृश्यते खल्वग्निरस्तीत्याप्त वचनाद्धूमादि
लिङ्गाच्चोत्पन्नाज ज्ञानादयमग्निरित्युत्पन्नै
स्यैन्द्रियकस्य ज्ञानस्य विशेषः।
स एव नैर्मल्यम् वैशद्यम्
स्पष्टत्वमित्यादिभिः शब्दैरभिधीयते।

प्र. क्र. (16) (ख)

उ०→ हेतुलक्षणरहिता हेतुवदवभासमाना हेत्वाभासाः।
असिद्धविरुद्धानैकान्तिकाकिञ्चित्कर भेदात्।

3

तदुक्तं परीक्षामुखे -
हेत्वाभासाः असिद्धविरुद्धानैकान्तिकाकिञ्चित्कराः।

असिद्धः - तत्रानिश्चयपथप्राप्तो ऽसिद्धः।
यथा - परिणामी शब्दः चाक्षुषत्वादिति।

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

तदुक्तं परीक्षामुखे
असत्सत्तानिश्चयोऽसिद्धः ।

तद् द्विविधं - ① स्वरूपासिद्धः
② संदिग्धासिद्धः

स्वरूपासिद्धः - स्वरूणाभावनिश्चये स्वरूपासिद्धः ।
यथा - परिणामी शब्दः चाक्षुषत्वादिति ।

संदिग्धासिद्धः - स्वरूपसंदेहे संदिग्धासिद्धः ।
यथा - अग्निमानयं प्रदेशो धूमवत्वात् ।

विरुद्धः - साध्यविपरीतव्याप्तो हेतुर्विरुद्धः ।
यथा - अपरिणामी शब्दः कृतकत्वादिति ।

अनैकान्तिकः - पक्षसपक्षविपक्षवृत्तिरनैकान्तिकः ।
यथा - धूमवानयं प्रदेशो अग्निमत्त्वादिति ।

तद् द्विविधं - ① निश्चितविपक्षवृत्तिकः
② शङ्कितविपक्षवृत्तिकः

अकिञ्चित्करः - अप्रयोजको हेतुरकिञ्चित्करः ।
तदुक्तं परीक्षामुखे -
सिद्धे प्रत्यक्षादिबाधिते च साध्ये हेतुरकिञ्चित्करः ।

तद् द्विविधं - ① सिद्धसाधन
② बाधितविषयः

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बाधितविषय: अनेकधा - (1) कश्चिद् प्रत्यक्षबाधितविषय:
(2) कश्चिद् पुनरनुमानबाधितविषय:
(3) कश्चिदागमबाधितविषय:
(4) कश्चिदस्ववचनबाधितविषय:

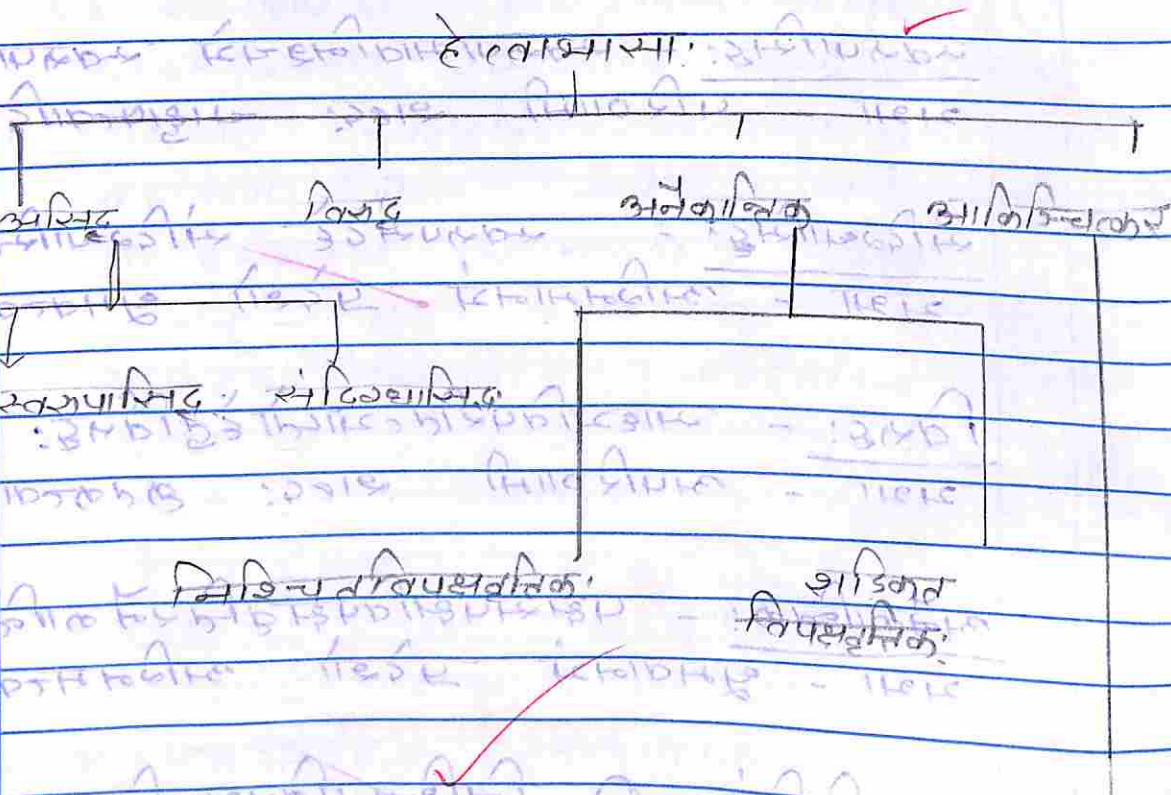

(1) कश्चिद् प्रत्यक्षबाधितविषय:
(2) कश्चिद् पुनरनुमानबाधितविषय:
(3) कश्चिदागमबाधितविषय:
(4) कश्चिदस्ववचनबाधितविषय:

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. क. (17) (ख)

उ→ नय - प्रमाणगृहीतार्थैक देशग्राही प्रमातुरभिप्रायविशेषः नयः ।

ज्ञातुरभिप्रायः नयः ।

सकलादेशः प्रमाणाधीनो, विकलादेशो नयाधीनः ।

नयः द्वेधा - (1) द्रव्यार्थिक नयः
(2) पर्यायार्थिक नयः

3

द्रव्यार्थिक नयः - द्रव्यमर्थः प्रयोजनमस्येत्यसौ द्रव्यार्थिक नयः ।

पर्यायार्थिक नयः - पर्यायोऽर्थः प्रयोजनमस्येत्यसौ पर्यायार्थिकः ।

अग्रे त्रयः नयः द्रव्यार्थिकः, शेषाः पर्यायार्थिक नयाः ।

तदुक्तं उमास्वामी तत्वार्थसूत्रग्रन्थे
नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूतानयाः ।

(1) नैगम नयः - अनभिनिर्वृत्तार्थ संकल्पमात्रग्राही नैगमः ।

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(2) संग्रह नय:- स्वजात्यविरोधेनैकध्यमुपानीय पर्यायाक्रान्तभेदानविशेषेण व्यवहारपूर्वकं ग्रहणं संग्रह: ।

(3) व्यवहार नय:- संग्रहनयाक्षिप्तानामर्थानां समस्त - ग्रहणात्मक व्यवहार: ।

(4) ऋजुसूत्र नय:- ऋजुं प्रगुणं सूत्रयति त्रयन्तीति ऋजुसूत्र: ।

(5) शब्द नय:- लिङ्गसाधनादिनिवृत्तिपर: शब्दनय: ।

(6) समभिरूढ नय:- नानार्थसमभिरोहणात् - समभिरूढ: ।

(7) एवंभूत नय:- भूतस्तेनैवार्थ वसायतीति एवंभूत: ।

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. क्र. (18)

उ→ प्रत्यक्ष – विशदप्रतिभासं प्रत्यक्षम्
तद् द्विविधं – सांव्यवहारिकं पारमार्थिकं चेति ।

पारमार्थिक प्रत्यक्ष – सर्वतो विशद पारमार्थिक प्रत्यक्षम् ।
यज्ज्ञानं साकल्येन स्पष्टं तत्पारमार्थिकप्रत्यक्षम् ।

तदुक्तं परीक्षामुखे –
परार्थं तु तदर्थपरामर्शिवचनाज्जातम् ।

(4)

तद् द्विविधं – (1) विकलं
(2) सकलं

विकलं – कतिपयविषयं विकलं
तद् द्विविधं – (1) अवधिज्ञानं
(2) मनःपर्ययज्ञानं च

अवधिज्ञानम् – अवधिज्ञानावरण क्षयोपशमाद् वीर्यान्तराय क्षयोपशम सहकृताज्जातं रूपिद्रव्यमात्र विषयमवधिज्ञानम् ।
अवधिः सीमा मर्यादा इति यावत् ।

तदुक्तं
अवहीयदित्ति ओही सीमाणाणेत्ति वण्णिदं समए ।

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(81)

मनः पर्ययज्ञानम् – मनः पर्यय ज्ञानावरण वीर्यान्तराय क्षयोपशम समुत्थं परमनोगतार्थ विषयं मनः पर्यय ज्ञानम् ।

सकलं – सर्वद्रव्यपर्यायविषयं सकलम् । तस्य भेदः

केवलज्ञानम् – घातिसंघातनिरवशेषघातनसमुन्मीलितं केवलज्ञानम् ।

तदुक्तं तत्त्वार्थसूत्रे –
सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ।

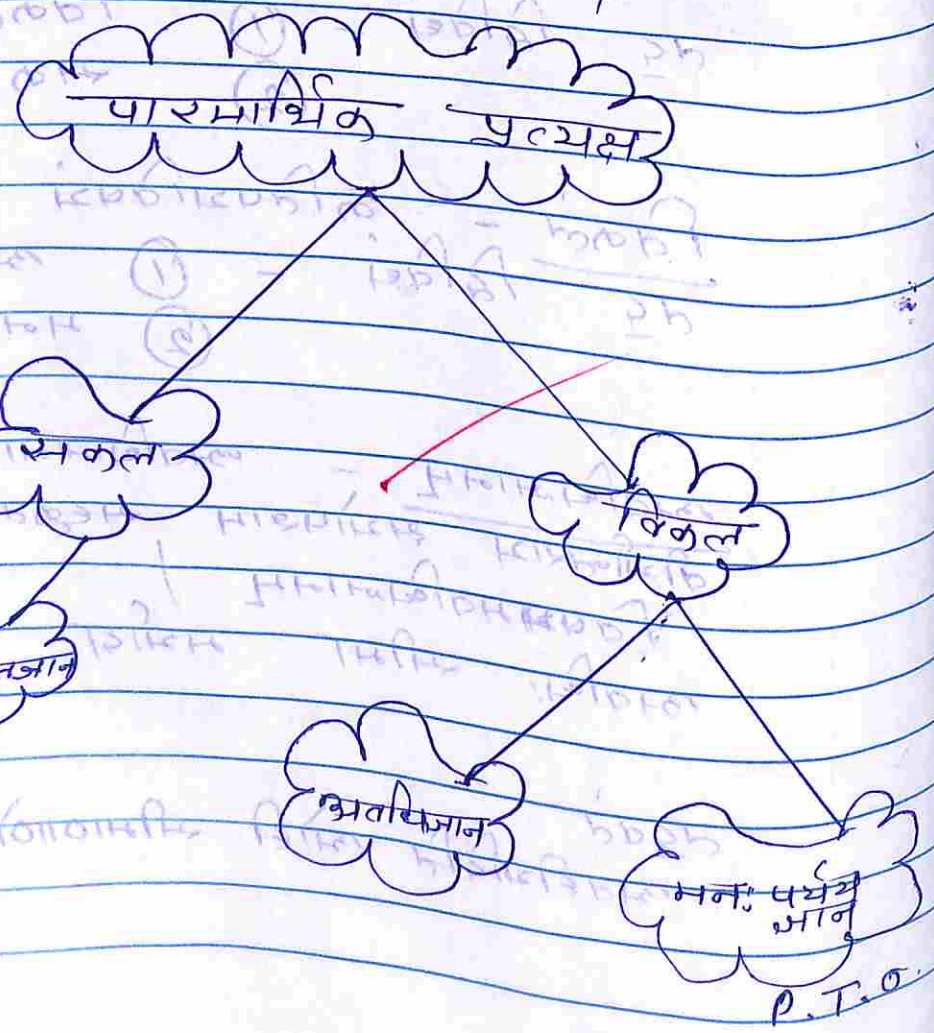

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र. क्र. (19)

3.) अनुमानम् = साधनात्साध्यविज्ञानमनुमानम् /
इहानुमानमिति लक्ष्यनिर्देशः,
साधनात्साध्यविज्ञानमिति लक्षणकथनम् /

साधनाज्ज्ञायमानाद्धूमादेः लिङ्गात् साध्येऽग्न्यादौ लिङ्गिनि यद्विज्ञानं जायते तदनुमानम् /

(4) तदनुमानं द्विविधं - (1) स्वार्थानुमानं
(2) परार्थानुमानं

(1) स्वार्थानुमानम् - स्वयमेव निश्चितात्साधनात्साध्य ज्ञानं स्वार्थानुमानम् /
परोपदेशमपेक्ष्य स्वयमेव निश्चितात्याकृतर्कानुभूतव्याप्तिस्मरणसहकृताद्धूमादेः साधनादुत्पन्न पर्वतादौ धर्मिण्यग्न्यादेः स्वार्थानुमानमित्यर्थः /

स्वार्थानुमानस्य त्रीण्यङ्गानि -
(1) धर्मी - तत्र साधनं गमकत्वेनाङ्गम् /
साध्य - साध्यं तु गम्यत्वेन /
साधन - धर्मी पुनः साध्यधर्माधारत्वेन /

(2) परार्थानुमानम् - परोपदेशमपेक्ष्य यत्साधनात्साध्य विज्ञानं तत्परार्थानुमानम् /

P.T.O.

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रतिज्ञाहेतुरूप परोपदेशवशात् श्रोतुरुत्पन्नं साधनात्साध्य विज्ञानं परार्थानुमानम् ।

नैयायिक परार्थानुमानम्
परोपदेश वाक्यमेव परार्थानुमानम् ।

प्रतिज्ञाहेतोर्द्वयमेवानुमानस्य परार्थानुमानस्याङ्गम् ।

प्रतिज्ञा – धर्मधर्मी समुदाय रूपस्य पक्षस्य वचनं प्रतिज्ञा ।
यथा – पर्वतोऽयमग्निमान् इति ।

हेतु – साध्याविनाभावि साधनवचन हेतुः ।
यथा – धूमत्वान्यथानुपपत्तेः ।

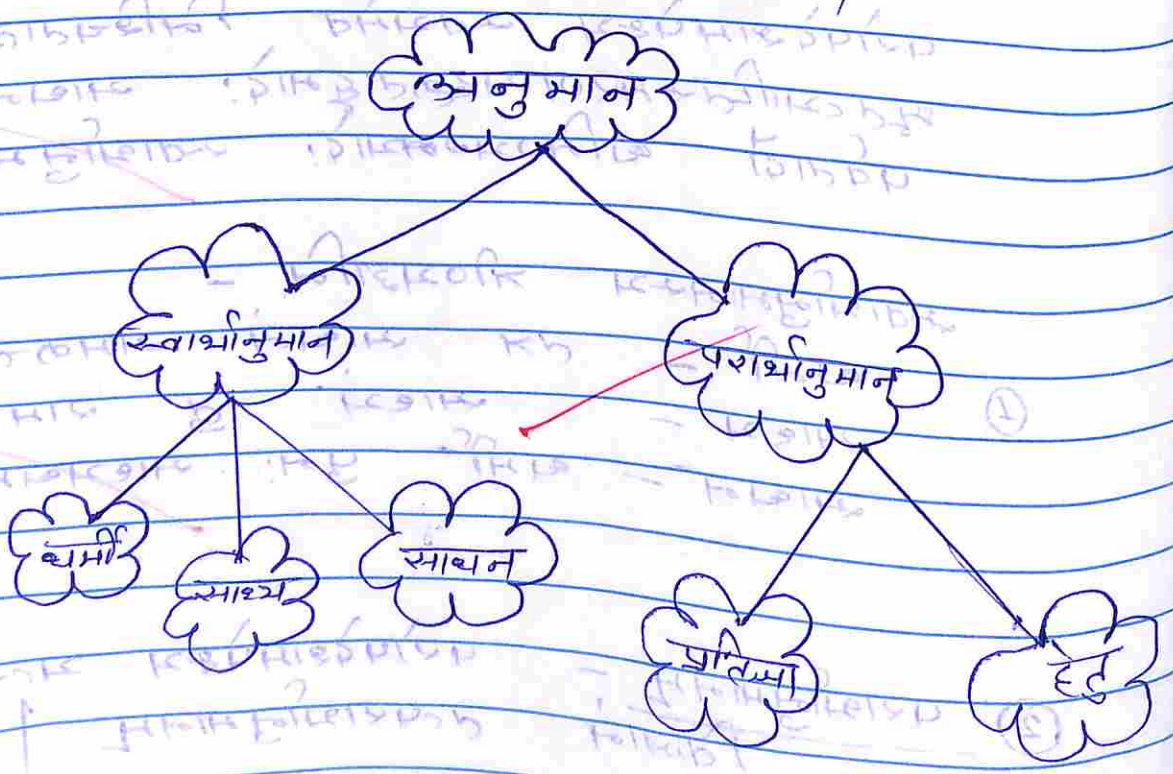

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र. क. (20) अथवा

उ→ पर्यायः – परिणमनस्य पर्यायः ।
पर्यायो द्विविधं –
(1) अर्थपर्यायः
(2) व्यञ्जनपर्यायः

(1) अर्थपर्यायः – भूतत्वभविष्यत्वसंस्पर्शरहित शुद्धवर्तमानकालावच्छिन्नं वस्तुस्वरूपम् पर्यायः अर्थपर्यायः ।

(2) व्यञ्जनपर्यायः – व्यञ्जनं व्यक्ति प्रवृत्ति निवृत्ति निबंधन जलानयनाद्यर्थ क्रियाकारित्वम् , तेनोपलक्षितः पर्यायः व्यञ्जनः पर्यायः ।

यथा मृदादेः , पिण्ड , स्थास , कोष , कुशूल , घट , कपालादयः पर्यायाः ।

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

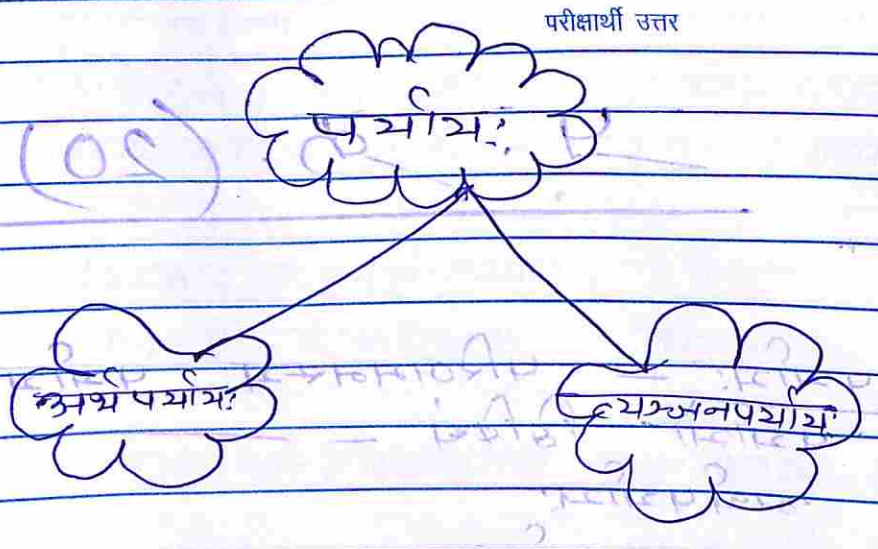

समाप्त

रोल नं - 3701460

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-177/2024